ANCIENT INDIAN HISTORY & ARCHAEOLOGY, PATNA UNIVERSITY, PATNA

संग्रहालय में प्रदर्शनी का स्वरूप एवं उपयोगिता

B.A. 3rd Year

Paper –VIII, Museum Methods, Tourism and Excursion

Dr. Manoj Kumar
Assistant Professor (Guest)
Dept. of A.I.H. & Archaeology,
Patna University, Patna-800005
Email- dr.manojaihcbhu@gmail.com

PATNA UNIVERSITY, PATNA

संग्रहालय में प्रदर्शनी का स्वरूप एवं उपयोगिता

संग्रहालयों को किसी भी देश अथवा राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य का प्रतीक माना जाता है। संग्रहालयों में स्थित संग्रहों के प्रदर्शन से समाज के अतीत का स्वरूप परिलक्षित होता है। यह संग्रह राष्ट्र की अमूल्य धरोहर होते हैं, जो वस्तुतः पूर्वजों की कला–प्रबुद्धता एवं सांस्कृतिक विकास के संवाहक के रूप में अपनी भूमिका प्रस्तुत करते हैं। संग्रहालयों में स्थित संग्रह प्रत्येक मनुष्य यथा कोई व्यक्ति किसी भी धर्म, जाति, आयु एवं रुचि के हों, के लिए उपयोगी सिद्ध हो रहे हैं। संग्रहालय एक सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्था है, जो जनता के लिए, जनता के द्वारा एवं जनता की धरोहर है तथा जनता के प्रति उत्तरदायी है।

संग्रहालय दो शब्दों 'संग्रह + आलय' से मिलकर बना है, जिसका तात्पर्य एक ऐसा स्थान जहाँ वस्तुएँ संग्रहीत होती हैं किन्तु संग्रहालय का यह एक कोशीय अर्थ है। सार्वजनिक संस्था के रूप में संग्रहालय का उद्‌भव यद्यपि आधुनिक युग की देन है परन्तु संग्रहालय का स्वरूप किसी न किसी रूप में प्राचीन काल से विद्यमान रहा है। वस्तुतः भारत में संग्रहालय के पर्यायस्वरूप 'जादूघर', 'अजायबघर' (वह स्थान जहाँ विशिष्ट प्रकार की अलभ्य प्राचीन वस्तुओं का संग्रह किया जाय), 'चिड़ियाघर', 'कौतुक भण्डार' आदि शब्द भी प्रचलन में हैं, जो वर्तमान संदर्भ में संग्रहालय के लिए प्रासंगिक नहीं हैं। आधुनिक युग में संग्रहालय मात्र अजायबघर या संग्रहस्थल न रहकर वस्तुतः समाज एवं संस्कृति के महत्त्वपूर्ण केन्द्र के रूप में स्थापित हो चुके हैं। अतः संग्रहालय का प्रारम्भिक स्वरूप मानव के स्वाभाविक संग्रही प्रवृत्ति के फलस्वरूप ही प्रारम्भ हुआ, जो वर्तमान में संस्कृति के केन्द्र स्थल के रूप में जाने जाते हैं।

संग्रहालयों का राष्ट्रीय चरित्र मानव समाज के विकास में संग्रहालय में संग्रहीत कलावस्तुओं के प्रदर्शन के माध्यम से राष्ट्रीय एकता, सामुदायिक सौहार्द, नैतिक बोध तथा सर्वोपरि देशहित की भावना प्रज्जवलित कर सहभागिता प्रदान करना है। संग्रहालय

को परिभाषित करते हुए अंतर्राष्ट्रीय संस्था आई0काम0 (ICOM) की दसवीं साधारण सभा ने संग्रहालय के क्रिया–कलाप एवं नीति को स्पष्ट किया है कि ''संग्रहालय एक अलाभकारी स्थायी संस्थान के रूप में समाज सेवा तथा उसके विकास में सक्रिय हों तथा जनता हेतु खुली हो जिसकी उपलब्धि मानव तथा उसके वातावरणजनित स्थूल प्रमाणों के अध्ययन, शिक्षण तथा आनन्द प्राप्ति हेतु संग्रहण, संरक्षण, अनुसंधान, सम्प्रेषण तथा प्रदर्शन करने में हो।'' अतः संग्रहालय का प्राथमिक कार्य वस्तुओं का संग्रहण एवं प्रदर्शन करना है। वस्तुतः संग्रहालय प्रदर्शनी से तात्पर्य किसी वस्तु विशेष को किसी निर्दिष्ट स्थान पर एक निश्चित समय–सीमा के अन्दर जन अवलोकनार्थ प्रस्तुत करने की प्रक्रिया से है। एम0एल0 निगम के अनुसार, ''प्रदर्शनी के द्वारा संग्रहालय किसी विशेष विषय से जुड़े वास्तविक प्रदर्शों से सम्बन्धित सूचना को सम्प्रेषित करते हैं और सामान्य दर्शकों में ज्ञान का संचार करते हैं।'' प्रदर्शनी संग्रहालय के संचार का सबसे विशिष्ट माध्यम है। इस प्रकार संग्रहालय द्वारा कलावस्तु को किसी निश्चित स्थान पर एक निश्चित समय–सीमा के अन्दर जन–अवलोकनार्थ प्रस्तुत करने की क्रिया का नाम प्रदर्शनी है। संग्रहालय प्रदर्शनी के माध्यम से विशेष विषय से सम्बन्धित ज्ञान का सम्प्रेषण सहज विधि से दर्शकों के बीच करता है। संग्रहालय में कलावस्तुओं के प्रदर्शन के पीछे एक प्रमुख उद्देश्य होता है और उस उद्देश्य को ध्यान में रखकर संग्रहालय प्रदर्शनी की रूपरेखा तैयार करता है। संग्रहालयों में प्रदर्शनी का आयोजन एक निश्चित स्थान पर निश्चित विषय– वस्तु से सम्बन्धित मूल प्रदर्शों को उनके सहायक तत्त्वों यथा शोकेस, पेडेस्टाल, नामपत्र, प्रकाश आदि के द्वारा सामंजस्य स्थापित करते हुए इस प्रकार प्रदर्शित किया जाता है कि उन प्रदर्शित कलावस्तुओं से सम्यक् ज्ञान प्राप्त हो सके। डी0राय चौधरी के शब्दों में, 'संग्रहालय की सर्वश्रेष्ठ विधि प्रदर्शनी है।''

संग्रहालय में प्रदर्शनी प्रदर्श मूलक न होकर दर्शक मूलक होनी चाहिए। इस आधार पर दर्शक प्रधान प्रदर्शनी के दो प्रकार होते हैं; प्राथमिक प्रदर्शन एवं द्वितीयक

प्रदर्शन। प्राथमिक प्रदर्शन में सम्मिलित होने वाले दर्शक सामान्य उद्देश्य के होते हैं। इन्हें सामान्य दर्शक भी कहते हैं। द्वितीयक प्रदर्शन में शोधार्थी, विद्वान एवं गम्भीर दर्शक आते हैं, जिनके लिए संग्रहालय द्वारा समय–समय पर स्थायी प्रदर्शनी के अतिरिक्त अस्थायी प्रदर्शनी का आयोजन किया जाता है। संग्रहालयों में प्रदर्श प्रधान प्रदर्शनी दो प्रकार के होते हैं, जो स्थायी एवं अस्थायी प्रदर्शनी के रूप में आयोजित किये जाते हैं। इसके अतिरिक्त संग्रहालय द्वारा सचल प्रदर्शनी का भी आयोजन किया जाता है, जिसके आयोजन का उद्देश्य ग्रामीण एवं दूर–दराज के क्षेत्रों में निवास कर रहे, उन दर्शकों के लिए किया जाता है, जिनको संग्रहालय के बारे में न तो जानकारी होती है और न ही वे संग्रहालय पहुँचने पाने में समर्थ होते हैं।

संग्रहालय के प्रारम्भिक काल में आयेजित होने वाली प्रदर्शनी वस्तुओं का संग्रह–स्थल अथवा सजावट मात्र ही हुआ करती थी, किन्तु संग्रहालयशास्त्र में नूतन विधियों के विकास एवं समावेश के बाद संग्रहालय के क्रियाकलाप एवं उद्देश्यों में क्रान्तिकारी परिवर्तन आया है। अब संग्रहालय समाज एवं दर्शक हेतु सूचना एवं मनोरंजन के केन्द्र स्थली के रूप में स्थापित हो चुके हैं। संग्रहालय द्वारा प्रदर्शनी के सुव्यवस्थित आयोजन में वस्तुओं को उनके कालानुक्रम या विषयानुसार एवं उनकी प्रकृति के अनुरूप सांस्कृतिक पीठिका पर समूहों में दिखाया जाता है, जो भावनाओं को स्पर्श करता है। प्रदर्शनी कर्त्ता का यह उद्देश्य होना चाहिए कि प्रदर्शों को समूहों में ऐसे सरल एवं सहज रूप में प्रस्तुत किया जाये कि संग्रहालय आने वाला सामान्य दर्शक भी उस प्रदर्शनी से प्रभावित होने के साथ ही ज्ञान प्राप्त कर सके।

संग्रहालय अपनी प्रकृति के विभिन्न वस्तुओं का संग्रह–स्थल होता है और उन संग्रहों का प्रदर्शन दर्शक एवं समाज के लोगों के मनोरंजन एवं ज्ञानवृद्धि हेतु किया जाता है किन्तु संग्रहालय द्वारा अपने सभी संग्रहों का प्रदर्शन करना न तो संभव है और न ही आवश्यक। क्योंकि संग्रहालय में प्रदर्शनी का आयोजन किसी विशेष उद्देश्य हेतु

किया जाता है और उस विशेष उद्देश्य हेतु सभी संग्रहों को सम्मिलित करना सम्भव नहीं होता है। अतः संग्रहालय में प्रदर्शनी हेतु संग्रहों को दो मुख्य वर्गों के अन्तर्गत वर्गीकृत करके प्रदर्शन हेतु विचार किया जा सकता है। प्रथम वर्ग में 'जन सामान्य के ज्ञानवर्धन और आनन्द को पूर्ण करने वाली सामग्री को सम्मिलित किया जाता है और दूसरे वर्ग में विद्वानों और शोधकर्त्ताओं के उद्देश्य को पूर्ण करने वाली सामग्री को सम्मिलित किया जाता है। इन दोनों वर्गों के संग्रहों को एक साथ प्रदर्शित करने से प्रदर्शनी कक्ष में भीड़–भाड़ और अव्यवस्था की स्थिति पैदा हो जायेगी, जिससे दर्शक के मन में प्रदर्शनी को लेकर संदेह एवं उबाऊपन उत्पन्न हो जायेगी और फलस्वरूप सूचना व मनोरंजन का सम्प्रेषण सफल एवं सरल तरीके से नहीं हो पायेगा। अतः दर्शक के मन में रुचि एवं आनन्द उत्पन्न करने और प्रदर्शन द्वारा प्रेरणा तथा संदेश प्रदान करने के लिए संग्रहालयों को दर्शकों की मानसिकता और अभिरुचि का ध्यान रखना चाहिए। संग्रहालय एक ऐसा संस्थान है जहाँ स्त्री–पुरुष, बालक–युवा, वृद्ध, शिक्षित–अशिक्षित, ग्रामीण–शहरी, धनाढ्य–मध्यम वर्ग एवं विभिन्न स्तर व आयुवर्ग के लोग आते हैं और संग्रहालय अपने संग्रहों के प्रदर्शन और सौंदर्यबोध द्वारा उन्हें एक सूत्र में बाँधे रखने का प्रयास करता है।

संग्रहालय प्रदर्शन में कलावस्तुओं का चुनाव महत्त्वपूर्ण होता है, क्योंकि उन कलावस्तुओं के प्रदर्शन के द्वारा ही दर्शकों तक ज्ञान, आनन्द और सूचना का प्रसार होता है। प्रदर्शनी का आयोजन दर्शकों के जिस भी स्तर को ध्यान में रखकर किया जाये, यह सदैव ध्यान रखना चाहिए कि प्रदर्शनी के सौंदर्यबोध एवं प्रभावशीलता में कमी नहीं आनी चाहिए। इन्हीं प्रमुख बिंदुओं को ध्यान में रखकर संग्रहालयों में स्थायी, अस्थायी एवं सचल प्रदर्शनी का आयोजन किया जाता है, जिससे वस्तुओं को सुव्यवस्थित एवं सुनियोजित ढंग से प्रदर्शित किया जा सके तथा दशकों की रुचि, एवं आकर्षण संग्रहालय प्रदर्शनी के प्रति बनी रहे। इस कार्य हेतु प्रदर्शों को प्राथमिक, द्वितीयक एवं

तृतीयक उद्देश्यों के अनुसार व्यवस्थित किया जाता है। डॉ0 ग्रेस मोर्ले के शब्दों में, ''प्रदर्शनी की विचारधारा की पृष्ठभूमि ही शैक्षणिक कार्य होते हैं, जिन्हें इतनी सावधानी से निर्धारित करना चाहिए, जैसे हम कोई व्याख्यान अथवा पुस्तक लिखने में सावधानी रखते हैं।''

अतः संग्रहालयों में वस्तुओं का प्रदर्शन, संग्रहालय के कार्य एवं संचार माध्यमों में प्राथमिक एवं सबसे सशक्त माध्यम है। प्रदर्शनी की अनिवार्य विशिष्टता संग्रहालय सामग्री को सुव्यवस्थित ढंग से ज्ञानवर्द्धनार्थ प्रस्तुत किये जाने की है, जिससे किसी भी दर्शक पर प्रदर्शित होने वाली कलावस्तुओं के अर्थ का प्रभावशाली ढंग से प्रभाव पड़ सके और संग्रहालय में संग्रहीत कलावस्तुओं के प्रदर्शन का उद्देश्य पूर्ण हो सके। अतः प्रदर्शों की योजना संग्रहालय आने वाले दर्शकों को ध्यान में रखकर बनानी चाहिए। संग्रहालय में दर्शक जटिल चार्टों से उलझने या लम्बी–लम्बी नामपट्टिकाओं (लेबल) को पढ़ने नहीं बल्कि यथार्थ वस्तुएँ देखने आते हैं। प्रदर्शनी यद्यपि अनिवार्यतः एक दृश्य माध्यम है किन्तु कभी–कभी आवश्यकतानुसार लिखित, कथित अथवा रिकार्ड किये हुए शब्दों, ध्वनियों और संगीत को सहायक तत्त्वों के रूप में शामिल किया जाता है। यह ध्यान रखना चाहिए कि जन–सामान्य के लिए वस्तुओं के प्रस्तुतिकरण में तकनीकी जटिलता अंशमात्र भी न हो। प्रदर्शनी के आयोजन में संग्रहालयाध्यक्ष का यह प्रमुख कर्त्तव्य बनता है कि संग्रहालय आने वाले साधारण दर्शक को भी कुछ न कुछ ज्ञान अथवा सूचना अवश्य प्राप्त हो। प्रदर्शनी के आयोजन में प्रदर्शनकर्त्ता का सबसे जटिल एवं महत्त्वपूर्ण कार्य मृत वस्तुओं को जीवन प्रदान करना है। यह कार्य सरल भाषा में लिखित स्पष्ट, आकर्षक विवरण, फोटोग्राफों के कुशल चुनाव, त्रिविमदर्शी के उपयोग, पारचित्र के प्रयोग आदि के द्वारा सरल एवं सुव्यवस्थित ढंग से किया जा सकता है।

स्थाई प्रदर्शनी संग्रहालय प्रदर्शन की आधारशिला है। प्रादर्शनियाँ जनसम्प्रेषण के प्राथमिक माध्यम हैं एवं स्थाई प्रदर्शनी जन–सामान्य तक पहुँचने के सर्वाधिक प्रभावशाली

एवं प्राथमिक साधन हैं। स्थाई प्रदर्शनीयों में प्रदर्शन का आयोजन संग्रहालय भवन में ही किया जाता है। स्थाई प्रदर्शनी में कलावस्तु को उनके प्रकृति एवं कालक्रमानुसार विभिन्न वीथिकाओं में सहायक तत्त्वों के माध्यम से प्रदर्शित किया जाता है। इस प्रकार की प्रदर्शनी संग्रहालय भवन में लम्बे समय तक लगायी जाती है। सामान्यतया प्रदर्शों को सुव्यवस्थित रीति से प्रदर्शित करने का कार्य संग्रहालयकर्मी अपने दृष्टिकोण से करते हैं लेकिन यह आवश्यक नहीं है कि दर्शक भी संग्रहालयकर्मी की उक्त धारणा या भावना के अनुरूप ही प्रदर्शनी का अवलोकन करें। प्रत्येक दर्शक की विचारधारा एवं अवलोकन करने की क्षमता अलग–अलग होती है। अत : स्थाई प्रदर्शनी का आयोजन वीथिका में लम्बे समय तक होता है, इस हेतु यह आवश्यक हो जाता है कि प्रदर्शनकर्त्ता दर्शकों के मनोभावों एवं भविष्य की योजनाओं को ध्यान में रखकर स्थाई प्रदर्शनी का आयोजन करें। प्रायः यह देखा गया है कि स्थायी प्रदर्शनी शिक्षित, विद्वान अथवा साक्षर वर्ग के दर्शकों हेतु सार्थक सिद्ध होती है किन्तु आम जनता तक प्रस्तुत प्रदर्शनी का प्रभाव नगण्य रह जाता है। अतः स्थाई प्रदर्शनी से पूर्व दर्शकों के व्यवहारों, रुचि एवं क्षेत्र के बारे में अध्ययन कर लेना चाहिए, जिससे संग्रहालयों की स्थाई प्रदर्शनी ज्यादा अर्थपूर्ण एवं प्रभावोत्पादक बन सके। प्रदर्शनी मात्र प्रदर्श मूलक न रह जाय बल्कि जनआकांक्षाओं की पूर्ति में सहायक हो।

स्थाई प्रदर्शनी में प्रदर्श की भूमिका सर्वोपरि है और प्रदर्श ही संग्रहालय के प्राण होते हैं। प्रदर्शों के अभाव में संग्रहालय एवं संग्रहालय में आयोजित होने वाली प्रदर्शनी की कल्पना भी नहीं कर सकते। किसी भी संग्रहालय के समस्त क्रिया–कलाप प्रदर्शों पर ही केन्द्रित होते हैं, जो संग्रहालय के अस्तित्व एवं संचार के प्रमुख एवं प्राथमिक माध्यम हैं। संग्रहालय में प्रदर्शों का चुनाव करते समय आवश्यक तौर पर सतर्कता बरतनी चाहिए। संग्रहालय में उन्हीं वस्तु का संग्रहण करना चाहिए जो संग्रहालय के प्रकृति के

अनुरूप हो और संग्रहालय हेतु आवश्यक हो, क्योंकि सभी वस्तुओं का संग्रह न तो संभव है और न ही संग्रहालय के संग्रहण नीति के अनुरूप।

स्थाई प्रदर्शनी में दूसरा महत्त्पवूर्ण आयाम है, प्रदर्शों के प्रदर्शन हेतु उपयुक्त स्थान का चयन। संग्रहालय विथिकाओं एवं स्थाई प्रदर्शनी हेतु उपयुक्त स्थान विभाजन एवं संयोजन विशेष अर्थ रखते हैं। स्थान का विभाजन जटिल नहीं होना चाहिए, जिससे दर्शक कक्ष में भ्रमित न हो। आन्तरिक कक्ष को पूर्ण रूप से खुला एवं सजावट सरल होनी चाहिए। इसके अतिरिक्त स्थाई प्रदर्शनी में शोकेस की भूमिका सुरक्षा एवं सौंदर्य की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। शो–केस से तात्पर्य यह है कि प्रदर्शनी हेतु प्रदर्शों को प्रदर्शन क्रिया के साथ–साथ उन्हें सुरक्षित रखने हेतु चतुर्दिक आवरण प्रदान करने से है। चूँकि स्थाई प्रदर्शनी एक स्थान पर लम्बे समय तक लगायी जाती है, इसलिए शोकेस के माध्यम से प्रदर्शों को धूल, कीड़े–मकोड़े, प्रकाश, प्रदूषित वायु एवं प्रतिकूल वातावरण के सम्पर्क में आने से रोका जा सकता है। प्रदर्शनी में प्रदर्शों के लिए लगाये जाने वाले नाम–पत्र का अपना विशेष महत्व है, जो सामान्य एवं विद्वान दोनों प्रकार के दर्शकों हेतु उपयोगी सिद्ध होते हैं। इस सम्बन्ध में डॉ0 ग्रेस मार्ले का विचार है कि ''सफल नामपत्र उसी को मानना चहिए जिसे पढ़कर दर्शक प्रदर्शों के अवलोकन मात्र से ही अपनी जिज्ञासा का समाधान कर सके।

संग्रहालय प्रदर्शनी की दूसरी महत्त्वपूर्ण विधा अस्थाई प्रदर्शनी है। अस्थाई प्रदर्शनी का आयोजन कई दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण है। ये नियमित दर्शकों की रुचि को बढ़ाकर संग्रहालय आने के लिए आकर्षित एवं प्रेरित करती है। अस्थाई प्रदर्शनी को संग्रहालय प्रचार का सबसे सशक्त माध्यम माना जाता है। ये प्रत्यक्ष प्रचार के सुन्दर माध्यम है।

स्थायी, अस्थायी प्रदर्शनी में दर्शक, संग्रहालय जाकर ही लाभान्वित हो पाते हैं किन्तु दूर–दराज एवं ग्रामीण परिवेश के लोग इस सुविधा का लाभ नहीं उठा पाते हैं। इस सम्बन्ध में या तो उन्हें संग्रहालय के बारे में जानकारी नहीं होती या वे संग्रहालय

आने में असमर्थ होते हैं। इस अभाव को दूर करने के लिए संग्रहालय सचल प्रदर्शन अर्थात् एक–स्थान से दूसरे स्थान जाने वाले प्रदर्शनी सामग्री का आयोजन करता है। इसमें प्रदर्शनी सामग्री को किसी वाहन, बस, ट्रक एवं ट्रेन आदि में रखकर एक स्थान से दूसरे स्थान ले जाया जाता है। इस प्रक्रिया में संग्रहालय कलावस्तुओं के स्थान पर उनके प्रतिकृति (रिप्लिका) छायाचित्र आदि का सहारा लिया जाता है। संक्षेप में हम इसे 'तैयार संग्रहालय (रेडीमेड म्यूजियम)' की भी संज्ञा देते हैं।

वर्तमान परिदृश्य में संग्रहालय की उपयोगिता समाज हेतु महत्त्वपूर्ण एवं अनिवार्य है। संग्रहालय का महत्त्व हमारी संस्कृति, सभ्यता, परम्परा, रीति–रिवाज एवं अतीत को जीवित रखने एवं उसकी सृजनात्मकता को बनाये रखने में है। संग्रहालय द्वारा ही एक देश अथवा राष्ट्र के व्यक्ति दूसरे देश अथवा राष्ट्र व्यक्ति की संस्कृति, वेश–भूषा, आहार–विहार आदि से परिचित हो सकते हैं और यह संग्रहालय में आयोजित होने वाली प्रदर्शनी के माध्यम से ही सम्भव है। प्रदर्शनी के द्वारा संग्रहालय अपनी राष्ट्र, संस्कृति, सभ्यता, वेश–भूषा से सम्बन्धित प्रदर्शों के प्रस्तुतिकरण द्वारा समाज को उनके गौरवशाली अतीत का दिग्दर्शन कराता है एवं अतीत का संरक्षण करते हुए स्वस्थ्य भविष्य का निर्माण करता है।